इकाई 7 प्रयोजनमूलक हिंदी : प्रयुक्तियाँ और व्यवहार क्षेत्र

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य
7.1 प्रस्तावना
7.2 प्रयोजनमूलक भाषा और प्रयुक्ति की संकल्पना
7.3 प्रयुक्ति क्या है?
7.4 प्रयुक्ति का आधार
  7.4.1 विषय क्षेत्र
  7.4.2 संप्रेषण का तरीका
  7.4.3 वक्ता और श्रोता अथवा लेखक और पाठक की स्थिति
  7.4.4 भाषा प्रयोग की औपचारिक तथा अनौपचारिक स्थिति
7.5 हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियाँ और उनका व्यवहार क्षेत्र
  7.5.1 प्रशासनिक अथवा कार्यालय हिंदी
  7.5.2 वाणिज्य, व्यापार और बैंकिंग के क्षेत्र में हिंदी
  7.5.3 वैज्ञानिक और तकनीकी हिंदी
  7.5.4 विधि के क्षेत्र में हिंदी
  7.5.5 सामाजिक विज्ञानों के क्षेत्र में हिंदी
  7.5.6 संचार माध्यमों में हिंदी
  7.5.7 विज्ञापन के क्षेत्र में हिंदी
7.6 सारांश
7.7 शब्दावली
7.8 उपयोगी पुस्तकें
7.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- बता सकेंगे कि प्रयोजनमूलक भाषा क्या है और प्रयुक्ति की संकल्पना से क्या तात्पर्य है,
- प्रयुक्ति को स्पष्ट करते हुए उसके प्रमुख आधारों की चर्चा कर सकेंगे,
- हिंदी भाषा की प्रमुख प्रयुक्तियों का उल्लेख कर सकेंगे, और
- उनके स्वरूप तथा व्यवहार क्षेत्र की जानकारी दे सकेंगे।

7.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में आप पढ़ चुके हैं कि प्रयोजनमूलक हिंदी क्या है और साहित्यिक हिंदी और सामान्य हिंदी से उसका क्या संबंध है। यानी किस दृष्टि से वह साहित्यिक हिंदी और सामान्य हिंदी से भिन्न है तथा किस दृष्टि से उनके समान है। प्रस्तुत इकाई में आप पढ़ेंगे कि भाषा का प्रयोजनमूलक स्वरूप किस प्रकार निर्मित होता है, प्रयुक्ति क्या है, उसका निर्माण किन आधारों पर होता है? भाषा के प्रयोजनमूलक स्वरूप का और प्रयुक्ति की संकल्पना के विषय में चर्चा के बाद हम हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियों के विषय में विचार करेंगे। इन प्रयुक्तियों के स्वरूप शब्दावली तथा अन्य विशिष्टताओं के बारे में जानकारी इस इकाई में आपको मिलेगी। प्रत्येक प्रयुक्ति को सोदाहरण समझाते हुए हम दिखाएँगे कि वे कौन से तत्व हैं जो उसे अन्य प्रयुक्ति से अलग करते हैं।

7.2 प्रयोजनमूलक भाषा और प्रयुक्ति की संकल्पना

आप पढ़ चुके हैं कि "प्रयोजनमूलक भाषा" से तात्पर्य है किसी प्रयोजन विशेष के लिए इस्तेमाल होने वाली भाषा। यों तो भाषा का उद्देश्य सदैव ही भावों और विचारों की अभिव्यक्ति होता है चाहे वह अभिव्यक्ति मौखिक है अथवा लिखित। लेकिन इस सहज प्रयोजन के अतिरिक्त भाषा कुछ निश्चित प्रयोजनों का माध्यम भी बनती है और ऐसे प्रयोजन विशेष के लिए इस्तेमाल की जाने वाली भाषा प्रयोजनमूलक भाषा कहलाती है। प्रश्न होगा कि वे प्रयोजन कौन से हैं। उत्तर होगा जीवन के विभिन्न कार्यक्षेत्रों से संबंधित प्रयोजन। दैनंदिन जीवन में हमारी विभिन्न भूमिकाएँ होती हैं और ये भूमिकाएँ हमारे भाषा व्यवहार को भी नियमित करती हैं। उदाहरण के लिए, परिवार के सदस्यों अथवा मित्रों के बीच हम जिस तरह की भाषा का प्रयोग करते हैं वैसी भाषा अपने व्यावसायिक सहयोगियों के साथ प्रयोग नहीं करते। यह अंतर कई तरह का होता है। सर्वप्रथम तो यह भाषिक औपचारिकता का अंतर होता है यानी परिवार के सदस्यों अथवा मित्रों से बातचीत अथवा पत्र-व्यवहार में हम कई तरह की भाषिक छूट ले लेते हैं उनके साथ हमारा भाषा-व्यवहार काफी अनौपचारिक होता है लेकिन अपने कार्यालय अथवा व्यवसाय के सहयोगियों के साथ हमारा भाषा व्यवहार औपचारिक होता है। उनके साथ हम "तू" "तुम" जैसे संबोधन इस्तेमाल नहीं करते, अनावश्यक हँसी-मजाक नहीं करते।

इसके अलावा एक और तरह अंतर आप गौर करते होंगे अपने रोजगार संबंधी कार्यों के दौरान आप जिस शब्दावली अथवा जैसे वाक्यांशों का व्यवहार करते हैं उसका व्यवहार रोजमर्रा की जिंदगी के अन्य कार्यों में नहीं करते। इतना ही नहीं आप किसी चीज के लिए आवेदन फार्म भरते हैं, बैंक में अपने खाते का संचालन करते हैं, अस्पताल में दवा लेने जाते हैं तो वहाँ जो फार्म आपको-भरने होते हैं या जो पर्चियाँ आपको डाक्टर द्वारा या अन्य संबद्ध व्यक्तियों द्वारा मिलती हैं उनकी भाषा में भी सामान्य व्यवहार की भाषा से भिन्नता दिखाई देती है। यह भिन्नता औपचारिकता के अलावा शब्दावली और वाक्यांशों की ही होती है। आपने यह भी ध्यान दिया होगा कि उस कार्यालय या संस्था विशेष से जुड़े सभी लोग उसी तरह की शब्दावली का प्रयोग करते हैं जो उनके कार्य विशेष से जुड़ी होती हैं और उनके अपने-अपने कार्यक्षेत्र के लोगों से संपर्क की भाषा का अनिवार्य अंग होती है। अपने कार्यालय या संस्था विशेष से बाहर भी अपने व्यवसाय से संबंधित लोगों से संपर्क में वे उसी भाषा का व्यवहार करते हैं। इस तरह यह उनके कार्य क्षेत्र के प्रयोजनों की भाषा होती है। विभिन्न कार्य क्षेत्रों अथवा व्यवहार क्षेत्रों में प्रयुक्त होने के कारण यह प्रयोजनमूलक भाषा कहलाती है। इसे व्यावहारिक भाषा (Functional Language) भी कहा जाता है। अतः हम चाहे "प्रयोजनमूलक हिंदी" कहें अथवा "व्यावहारिक हिंदी" दोनों का मायने एक ही होता है।

प्रयोजनमूलक भाषा का इस्तेमाल किन्हीं प्रयोजनों के लिए किया जाता है। इस दृष्टि से विभिन्न प्रयोजनों के लिए इस्तेमाल होने वाली भाषा-अलग-अलग होती है। व्यापार के प्रयोजनों की भाषा विज्ञान के प्रयोजनों से भिन्न होती है। यह भिन्नता जिस रूप में प्रकट और मान्य होती है उसका आधार होती है प्रयुक्ति। वास्तव में प्रयुक्ति ही भाषा को प्रयोजनमूलक स्वरूप प्रदान करती है। विभिन्न प्रयोजनों के अनुरूप भाषा में होने वाली विभिन्न प्रयुक्तियाँ भाषा के विभिन्न सामाजिक पक्षों को उद्घाटित करती हैं। इस तरह प्रयुक्ति की संकल्पना प्रयोजनमूलक भाषा की विभिन्न छवियों को समझने का आधार बन सकती है।

7.3 प्रयुक्ति क्या है?

आपके मन में प्रश्न उठा होगा कि प्रयुक्ति क्या है? "प्रयुक्ति" शब्द "प्रयुक्त" में "इ" प्रत्यय लगाकर बना है। "प्रयुक्त" का अर्थ है प्रयोग में लाया हुआ। भाषा का जो रूप किसी विषय अथवा कार्य क्षेत्र में बार-बार या लगातार प्रयुक्त होता है वह उस कार्य क्षेत्र की भाषिक विशिष्टता बन जाता है। इस भाषिक विशिष्टता को उस विषय अथवा कार्य क्षेत्र विशेष की "प्रयुक्ति" कहा जाता है। "प्रयुक्ति" वस्तुतः अंग्रेजी शब्द" "Register" का हिंदी पर्याय है। सामाजिक जीवन व्यवहार में हर क्षेत्र की भाषा की अपनी विशिष्टताओं को देखते हुए भाषाविदों ने "रजिस्टर" यानी प्रयुक्ति की संकल्पना निर्धारित की है। सामाजिक स्तर भेद के कारण भाषा में जो अंतर आता है वही प्रयुक्ति का रूप-निर्धारण करता है, जैसे व्यापारियों की भाषा और कचहरी की भाषा का अपना-अपना मुहावरा और शब्दावली होती है। इस तरह विविध स्थितियों और विषय क्षेत्रों में भाषा व्यवहार की एक निश्चित पद्धति बन जाती

है, जो उस क्षेत्र विशेष से जुड़े समाज द्वारा सामान्य रूप में स्वीकृत होती है। प्रयोजनमूलक भाषा के विविध रूप इन प्रयुक्तियों द्वारा निर्धारित होते हैं।

सामाजिक स्तर भेद की भूमिका के भेद के कारण भाषा का अंतर यद्यपि काफी छोटे या सीमित स्तर पर भी देखा जाता है जैसे बच्चों की भाषा या स्त्रियों की भाषा या पुरुषों की भाषा, नौकरी पेशा लोगों की भाषा, श्रमिकों की भाषा, अध्यापकों की भाषा आदि। लेकिन यह भेद प्रयुक्ति का आधार नहीं हो सकता, क्योंकि प्रयुक्ति का संबंध एक स्तर पर व्यवसाय या आजीविका विशेष से भी होता है। किसी कार्य क्षेत्र विशेष से संबंधित सभी लोगों की भाषा में पायी जाने वाली समानता के आधार पर प्रयुक्ति का निर्धारण होता है। उदाहरण के लिए, विधिक प्रक्रिया से जुड़े सभी लोग न्यायाधीश वकील, मुहर्रर, पेशकार, मुवक्किल, विधिवेत्ता, विधि शिक्षक, विधि छात्र, आदि विभिन्न स्तरों के व्यक्ति विधि की भाषा का प्रयोग करते हैं। विधि की विशिष्ट शब्दावली, वाक्यांश वाक्य-प्रयोग के ढंग आदि को मिलाकर भाषा विधिक प्रयुक्ति निर्मित होती है।

7.4 प्रयुक्ति का आधार

हम चर्चा कर चुके हैं कि प्रयोग की विशेषताओं के आधार पर किसी भाषा के अंतर्गत प्रयुक्तियाँ अथवा "रजिस्टर" बन जाते हैं। प्रश्न उठता है कि क्या एक प्रयुक्ति दूसरी से सर्वथा भिन्न होती है तथा इन प्रयुक्तियों को किस आधार पर निश्चित अथवा निर्धारित किया जाता है। प्रयुक्ति चूँकि भाषा के भीतर ही विशिष्ट भाषा रूप होता है, अतः उस भाषा की व्यापक विशेषताएँ तो उसमें होती ही हैं। यानी विभिन्न प्रयुक्तियों की शब्दावली मिलकर उस भाषा की शब्दावली बनती है तथा भाषा की संरचना और उसका सामान्य मुहावरा प्रयुक्तियों में मौजूद रहता है। इसलिए एक प्रयुक्ति का दूसरी प्रयुक्ति में अंतः प्रवेश बराबर होता रहता है। उदाहरण के लिए, हमें साहित्यिक लेखन में विज्ञान, दर्शन अथवा गणित की शब्दावली का समावेश आमतौर पर देखने को मिलता है। लेकिन इसके बावजूद शब्दावली प्रयुक्ति का महत्वपूर्ण आधार होती है। प्रयुक्ति के निर्धारण में वह महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और यह निर्वाह दो प्रकार से होता है :

1) क्षेत्र विशेष की विशिष्ट शब्दावली होती है जैसे—आक्सीजन, हाइड्रोज़न आदि विज्ञान के शब्द हैं।
2) शब्दों के अर्थ विभिन्न क्षेत्र में भिन्न-भिन्न होते हैं जैसे "पद" शब्द कविता में छंद विशेष के लिए प्रयुक्त होता है, आम बोलचाल में इसका अर्थ पैर से है, व्याकरण में इसका अर्थ अभिव्यक्ति से संबंधित है और प्रशासनिक क्षेत्र में इसका अर्थ ओहदे से है।

शब्दावली के अतिरिक्त और भी कई महत्वपूर्ण आधार हैं जिनसे प्रयुक्ति को पहचाना या निर्धारित किया जा सकता है। इनकी चर्चा हम यहाँ कर रहे हैं :

7.4.1 विषय क्षेत्र

भाषा का प्रयोग जिस विषय क्षेत्र में किया जाए वह विषय विशेष या संदर्भ विशेष भाषा के स्वरूप को निर्धारित करता है। उस क्षेत्र विशेष की शब्दावली और वाक्य संरचना अपने ढंग की होती है, जो अपने क्षेत्र विशेष में काफी सार्थक और परिपाटीबद्ध होती है जैसे कचहरी (न्यायालय) की भाषा को ही लें। कचहरियों में इस्तेमाल होने वाली हिंदी में अधिकतर उर्दू शब्दों की बहुलता होती है और वाक्य विन्यास भी अपने ढंग का होता है, भाषा औपचारिक होने के साथ ही अर्थ की एक निश्चितता होती है। उदाहरण के लिए "बनाम" शब्द सुनते ही हमें दो ऐसे पक्षों का ध्यान आ जाएगा जिनके बीच कोई मुकदमा चल रहा हो लेकिन "बनाम" के स्थान पर कोई अन्य शब्द नहीं रखा जा सकेगा। यानी "रामसिंह बनाम केसरी सिंह" शब्दों के विवादाधीन मामले की जो ध्वनि निकली है, वह "रामसिंह और केसरी सिंह के बीच" कहने से नहीं निकलेगी। इसी भांति न्यायालय में जब वादी या प्रतिवादी पक्ष को प्रस्तुत होने के लिए आदेश दिया जाता है तो कहा जाता है : "·····हाज़िर हो" : लेकिन कोई सार्वजनिक सभा चल रही हो तब मंच पर किसी व्यक्ति को बुलाया जाएगा तो "·····हाज़िर हों" न कहकर कहा जाएगा "·····मंच पर आएँ" या "आने का कष्ट करें"।

7.4.2 संप्रेषण का तरीका

संप्रेषण का तरीका भी प्रयुक्ति का स्वरूप निर्धारित करने का महत्वपूर्ण घटक होता है। मौखिक और लिखित संप्रेषण के अनुसार हमारी शब्दावली, लहजे, वाक्य विन्यास आदि में बड़ा परिवर्तन आता है।

लिखित रूप में औपचारिकता और सतर्कता, दोनों ही बढ़ जाते हैं।

7.4.3 वक्ता और श्रोता अथवा लेखक और पाठक की स्थिति

संप्रेषण लिखित हो अथवा मौखिक, इस बात का बहुत असर पड़ता है कि कौन किससे किस समय बात कर रहा है जैसे आयुर्विज्ञान संस्थान का एक डॉक्टर मरीज की नाजुक हालत और उसके उपचार के संबंध में अपने सहयोगियों से राय-मशविरा कर रहा हो तब और अपने अनुसंधान परक लेख को विद्वान मंडली में पढ़ रहा हो तब उसकी भाषा के वाक्य-विन्यास, लहजे आदि में काफी अंतर होता है। वही डॉक्टर जब उस बात को आयुर्विज्ञान संस्थान के प्रथम वर्ष या द्वितीय वर्ष के छात्रों को समझा रहा हो तो फिर एक खास तरह का अंतर दिखाई देता है।

7.4.4 भाषा प्रयोग की औपचारिक तथा अनौपचारिक स्थिति

ऊपर जिस डॉक्टर का उदाहरण दिया गया है, वही जब अपने डॉक्टर मित्रों से चाय पार्टी में बात कर रहा हो तब उसका भाषा व्यवहार ऑपरेशन की मेज पर उन्हीं डॉक्टर मित्रों के भाषा व्यवहार से भिन्न होगा। कहने का आशय यह है कि पहली स्थिति में वह अनौपचारिक भाषा का इस्तेमाल करेगा, जबकि दूसरी स्थिति में वह पूरी तरह औपचारिक और सचेत होगा। दूसरी स्थिति में उसकी भाषा चिकित्सा विज्ञान के भीतर आएगी, जबकि पहली स्थिति में ऐसा होना ज़रूरी नहीं है।

उपर्युक्त आधारों को हम प्रयुक्ति के निर्धारण में इस्तेमाल करते हैं। ध्यान रखने की बात यह है कि ज़रूरी नहीं कि ये चारों आधार हर प्रयुक्ति के संबंध में बराबर मात्रा में लागू हों। ये आधार वस्तुतः मोटे तौर पर निर्धारित किए गए हैं और दो प्रयुक्तियों के बीच अंतर में कभी किसी एक या दो आधारों पर बल रहता है तो कभी अन्य आधारों पर।

सामान्य या समाज और जीवन के विविध कार्य क्षेत्रों के आधार पर किसी भाषा की निम्नलिखित प्रयुक्तियाँ हो सकती हैं:

- सामान्य व्यवहार की प्रयुक्ति
- साहित्यिक प्रयुक्ति
- वाणिज्य-व्यापार की प्रयुक्ति
- बैंकिंग से संबंधित प्रयुक्ति
- प्रशासनिक प्रयुक्ति
- विधिक प्रयुक्ति
- वैज्ञानिक प्रयुक्ति
- मीडिया अथवा पत्रकारिता (संचार माध्यमों) से संबंधित प्रयुक्ति
- विज्ञापनी प्रयुक्ति

इन प्रयुक्तियों के अलावा भी और तरह की प्रयुक्तियाँ आवश्यकतानुसार विकसित हो सकती हैं।

जैसे-जैसे नए-नए क्षेत्रों में भाषा का प्रयोग बढ़ता है, वैसे-वैसे भाषा में उन क्षेत्रों के अनुरूप प्रयुक्तियाँ विकसित होती हैं। इन प्रयुक्तियों से ही भाषा का प्रयोजनमूलक स्वरूप निर्धारित होता है। यदि किसी समाज का विकास किन्हीं अन्य क्षेत्रों में होता तो उससे संबंधित भाषा की नई प्रयुक्तियां भी स्वतः विकसित होती जाएंगी।

7.5 हिंदी की विभिन्न प्रयुक्तियां और उनका व्यवहार क्षेत्र

हिंदी के संदर्भ में व्यावहारिक अथवा प्रयोजनमूलक विशेषण का प्रयोग अपेक्षाकृत नया है। इसका ऐतिहासिक कारण है और वह कारण यह है कि इसका विविध प्रयोजनों के लिए सामान्य प्रयोग अपेक्षाकृत नई घटना है। हिंदी भाषा और उसकी बोलियाँ या साहित्यपरक और बोलचाल का रूप जितना पुराना है, उतना अन्य प्रयोजनपरक रूप नहीं है। हालाँकि अंतर्देशीय* वाणिज्य और व्यापार की भाषा के रूप में हिंदी बहुत समय से देश की संपर्क भाषा बनी हुई थी, लेकिन आधुनिक काल में आकर उसने कई नए दायित्वों का वहन किया है। उन्नीसवीं शताब्दी में पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान और प्रौद्योगिकी से संपर्क, आधुनिक शिक्षा की शुरुआत के साथ शिक्षा के माध्यम के रूप में उसके प्रयोग, भारतीय भाषाओं में पत्रकारिता के विकास और स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् संघ की राजभाषा के रूप में उसकी स्वीकृति,

देश में औद्योगिक विकास आदि कारणों से हिंदी भाषा को नए दायित्वों से गुज़रना पड़ा और उनके विभिन्न प्रयोजनमूलक क्षेत्र विकसित हुए और हो रहे हैं।

प्रयोजनमूलक हिंदी का तेज़ी से विकास आधुनिक युग में आकर हुआ है। इसका कारण बदलती हुई जीवन स्थितियों में भाषा को नए दायित्वों से होकर गुज़रना पड़ा है और उसने नई अथच्छवियां* और नए रूप विकसित किए हैं। आधुनिक काल से पूर्व हमारी सामाजिक व्यवस्था कृषि एवं शिल्प पर आधारित व्यवस्था है। अतः कृषि, हस्तशिल्प, और व्यापार संबंधी प्रयुक्तियाँ हमारी बोलियों में मौजूद थीं। आधुनिक औद्योगीकरण और वैज्ञानिक विकास के साथ हिंदी भाषा नई प्रयुक्तियों में ढली है और ढल रही है। इस तरह समाज का विकास जिन-जिन क्षेत्रों में होता जाएगा और जिन-जिन क्षेत्रों में हिंदी भाषा का प्रयोग हम करते रहेंगे उन-उन क्षेत्रों से संबंधित प्रयुक्तियाँ इस भाषा में विकसित होती रहेंगी। उदाहरण के लिए, कंप्यूटर से संबंधित व्यापक शब्दावली हिंदी में आई है। यदि इस क्षेत्र में और अधिक विस्तार होता है और उसका माध्यम हिंदी भाषा बनती है तो संभव है कभी एक नई प्रयुक्ति विकसित हो जाए।

हिंदी भाषा की प्रमुख वर्तमान प्रयुक्तियाँ निम्नलिखित हैं :

1) सामान्य व्यवहार या बोलचाल की हिंदी
2) साहित्यिक हिंदी
3) कार्यालय हिंदी
4) वाणिज्य व्यापार
5) बैंकिंग में हिंदी
6) वैज्ञानिक और तकनीकी हिंदी
7) विधि के क्षेत्र में हिंदी
8) सामाजिक विज्ञानों के क्षेत्र में हिंदी
9) संचार माध्यमों में हिंदी
10) विज्ञापन के क्षेत्र में हिंदी।

इन दस प्रयुक्तियों में से पहली दो को छोड़कर शेष प्रयुक्तियों का संबंध प्रयोजनमूलक हिंदी से है। पहली प्रयुक्ति यानी सामान्य बोलचाल की भाषा अनौपचारिक होती है साथ ही, इसमें बड़ी व्यापक छूट होती है, जरूरत पड़ने पर किसी भी क्षेत्र विशेष की प्रयुक्ति का समावेश इसमें किया जा सकता है। दूसरी, यानी साहित्यिक भाषा में भी इस तरह की छूट होती है साथ ही, साहित्य के अपने बंधनों और अनुशासनों को भी अवसरानुकूल अपनाया जा सकता है। अन्य सभी प्रयुक्तियाँ व्यवसाय विशेष अथवा ज्ञान विशेष से संबंधित हैं। उनसे परिचय के लिए सम्बद्ध विषय के ज्ञान का अध्ययन तथा व्यवसाय में सक्रिय होने की ज़रूरत होती है।

आगे हम हिंदी की उपर्युक्त प्रवृत्तियों के स्वरूप की चर्चा करते हुए उनकी शब्दावली तथा अन्य विशेषताओं से आपका परिचय कराएँगे। विभिन्न प्रयुक्तियों के व्यवहार क्षेत्र की जानकारी पाने के साथ-साथ आप इन प्रयुक्तियों की विशिष्टताओं तथा आपसी अंतर को भी आप पहचान सकेंगे।

बोध प्रश्न 1

क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच पंक्तियों में दीजिए।

1) प्रयोजनमूलक भाषा से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्रयुक्ति क्या होती है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) प्रयुक्ति के प्रमुख आधार कौन से हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

4) प्रयोजनमूलक हिंदी की प्रयुक्तियाँ कौन-सी हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

ख) निम्नलिखित में से क्या चीज प्रयोजनमूलक भाषा में नहीं पाई जाती :

1) विशिष्ट शब्दावली
2) संप्रेषण की खास पद्धति
3) अनौपचारिकता
4) निश्चित प्रयोजनों के लिए उपयोग

ग) व्यावहारिक हिंदी से तात्पर्य है :

1) कार्यालय हिंदी
2) बोलचाल की हिंदी
3) कविता की भाषा
4) प्रयोजनमूलक हिंदी

7.5.1 प्रशासनिक हिंदी अथवा कार्यालय हिंदी

प्रशासनिक हिंदी से तात्पर्य प्रशासनिक कार्यों के लिए इस्तेमाल की जाने वाली हिंदी भाषा से है। कार्यालयों के दैनिक कामकाज में इस्तेमाल होने के कारण इसे कार्यालय हिंदी भी कहा जाता है। सरकारी तथा सार्वजनिक क्षेत्र के कार्यालयों में हिंदी भाषा का प्रयोग आजादी के बाद की घटना है। आजादी से पहली अंग्रेजी राजभाषा थी। अंग्रेजों से पहले मुगल काल में फारसी राजभाषा थी। प्रशासनिक कार्य व्यवस्था में हिंदी के प्रयोग की शुरुआत के विषय में 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा द्वारा निर्णय लिया गया कि स्वाधीन देश में सरकारी कामकाज देश की अपनी भाषा में होना चाहिए और परिणामस्वरूप भारतीय संविधान में हिंदी को संघ सरकार की राजभाषा घोषित किया गया। हिंदी भाषी राज्यों में भी यह राज्य सरकार की राजभाषा बनी।

इस तरह हिंदी भाषा को नए दायित्व सौंपे गए। इन नए दायित्वों के अनुरूप शब्दावली और भाषायी मुहावरे का विकास हिंदी में होने पर कार्यालय हिंदी की प्रयुक्ति विकसित हुई। इस प्रयुक्ति के विकास में पिछली राजभाषाओं ने प्रभावपूर्ण भूमिका अदा की। इसका कारण यह था कि आजादी के बाद सरकारी कार्यालयों में कामकाज की वही पद्धति अपनायी गई थी जो अंग्रेजी शासन काल से चली आ रही थी। पुरानी पद्धति को हिंदी भाषा के माध्यम से कार्यान्वित करने के लिए अनुवाद की व्यापक मात्रा में जरूरत हुई। संपूर्ण कार्यविधि साहित्य अंग्रेजी में उपलब्ध कराना था। इसे हिंदी में अनूदित कराने की व्यवस्था की गई इसके हिंदी में प्रशासनिक शब्दावली तैयार की गई और अनुवाद कार्य आरंभ किया गया। इस तरह कार्यलय हिंदी के विकास में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही है और आज भी है।

जहाँ तक कार्यालय हिंदी के स्वरूप का प्रश्न है इसकी पहली शर्त है सरलता, स्पष्टता और सुबोध गम्यता। इस भाषा का इस्तेमाल प्रशासनिक कार्यों के लिए किया जाता है लेकिन यह उनको समझ में आनी चाहिए जिनके लिए प्रशासन किया जा रहा है यानी यह आम जनता को बोधगम्य होनी चाहिए।

उदाहरण के लिए, कोई आवेदनपत्र फार्म जिन व्यक्तियों को भरना है उन्हें इसकी भाषा समझ में आनी चाहिए। इसी तरह यदि कोई सूचना जारी की गई है तो वह संबद्ध लोगों को समझ में आनी चाहिए। कार्यालय की भाषा औपचारिक भाषा होती है। विज्ञान की भाषा भी औपचारिक होती है। लेकिन दोनों की औपचारिकता में अंतर होता है। कार्यालय की भाषा में आत्मनिष्ठता नहीं होती साथ ही साथ उसमें अधिकारीतंत्र के पदानुक्रम पर आधारित औपचारिकता भी होती है। उच्चतर अधिकारी अथवा अधीनस्थ अधिकारी से खास तरह की औपचारिकता का निर्वाह किया जाता है। इसके साथ ही पारिभाषिक शब्दावली का सुनिश्चित अर्थ में प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, नीचे दिए गए पत्र को पढ़िए

सं. एफ 5-8/73 स्था.
भारत सरकार
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(शिक्षा विभाग)

शास्त्री भवन, नई दिल्ली
ता॰ 20 अगस्त, 89

सेवा में

सचिव
संघ लोक सेवा आयोग
नई दिल्ली-110 011

विषय : **द्वितीय श्रेणी के राजपत्रित अधिकारियों की तदर्थ नियुक्ति।**

महोदय,

ऊपर दिए गए विषय पर इसी मंत्रालय के समसंख्यक पत्र ता॰ 18 मई 74 के बारे में मुझे आपसे अनुरोध करने का निदेश हुआ है कि इस मंत्रालय के एक अधीनस्थ कार्यालय—केंद्रीय हिंदी निदेशालय के द्वितीय श्रेणी के राजपत्रित अधिकारियों की तदर्थ नियुक्तियों को नियमित करने के बारे में आयोग की सहमति शीघ्र भेजने की कृपा करें।

भवदीय

(सी. बालचंद्रन)
अवर सचिव, भारत सरकार

उपर्युक्त पत्र पर ध्यान दीजिए। इसमें कार्यालय का नाम, पत्र संख्या आदि को सुनिश्चित स्थान पर लिखकर तथा संबद्ध अधिकारी को पदनाम यानी "सचिव, संघ लोक सेवा आयोग" से संबोधित करते हुए पर्याप्त औपचारिकता अपनाई गई है। मूल सूचना देने के पश्चात स्व-निर्देश के रूप में "भवदीय" लिखकर हस्ताक्षर के नीचे पदनाम यानी "अवर सचिव" लिखा गया है। पत्र की ढांचेगत औपचारिकता के अतिरिक्त वाक्य विन्यास भी औपचारिक है जैसे "मुझे आपसे अनुरोध करने का निदेश हुआ है। "आयोग की सहमति शीघ्र भेजने की कृपा करें"। इन वाक्यांशों में "निदेश हुआ है" है "कृपा करें" आदि शब्द मात्र शैलीगत औपचारिकता के लिए ही नहीं हैं बल्कि कार्यालय की कार्यप्रक्रिया को भी प्रकट करते हैं। पत्र लिखने वाला अधिकारी किसी ऊपर के अधिकारी के निर्देश का पालन करते हुए अनुरोध कर रहा है। इस तरह कार्य के बीच का माध्यम है। इस पत्र की शब्दावली पर ध्यान दीजिए। "समसंख्यक पत्र" "नियमित" आदि शब्दों का प्रयोग आपने आम जिंदगी की बोलचाल की भाषा में नहीं सुना होगा। ये प्रशासनिक क्षेत्र के तकनीकी शब्द हैं और इनका प्रयोग इसी रूप में होता है इनके पर्याय हो सकते हैं लेकिन उन पर्यायों को प्रशासन की भाषा में इस्तेमाल नहीं किया जाता जैसे "समसंख्यक पत्र" के स्थान पर "इसी संख्या वाले पत्र" अधीनस्थ कार्यालय" के स्थान पर "मातहत कार्यालय" आदि का प्रयोग नहीं होता।

इसी तरह यहाँ प्रयुक्त "निदेश शब्द पर ध्यान दीजिए। सामान्यतया आपने "निर्देश" शब्द सुना होगा। "निर्देश" और "निदेश" दोनों ही शब्दों का अर्थ है हिदायत। लेकिन प्रशासनिक शब्दावली में हिदायतों के लिए "निदेश" ही प्रचलित है। अतः इस पत्र "निदेश" का स्थान "निर्देश" नहीं ले सकता।

इसके अतिरिक्त यहां आपने कर्म वाच्य के प्रयोग पर भी गौर किया होगा "निदेश हुआ है" जैसे प्रयोग कार्यालय की भाषा की विशेषता होती है। इसमें निम्नलिखित ढंग के कर्मवाच्य प्रयोग आप को खूब

देखने को मिलेंगे "इस वर्ष का कर निर्धारण हो चुका है और मुझसे 2000 रु. आयकर देने की माँग की गई है"

"आम चुनाव की तैयारी आरंभ कर दी गई है"।

"सेवा निवृत्ति के बाद यदि सरकारी मकान तुरंत खाली न किया जाए तो उसका किराया बढ़ी दर से देना पड़ेगा"।

अभ्यास 1

क) नीचे कार्यालय पत्र का एक नमूना दिया जा रहा है। इसकी भाषा पर ध्यान दीजिए।

प.सं. 7-2/88-प्रशासन
भारत सरकार
केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो
राजभाषा विभाग : गृह मंत्रालय

पर्यावरण भवन, 8वां तल, सी.जी.ओ. काम्पलैक्स, लोदी रोड, नई दिल्ली-3
दिनांक 6 सितम्बर, 1988

विषय : अनुवाद अधिकारी/प्रशिक्षण अधिकारियों की अंतिम वरिष्ठता सूची

केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो में दिनांक 1.7.73, 1.7.85 तथा दिनांक 1.7.88 को कार्य कर रहे अनुवाद अधिकारियों/प्रशिक्षण अधिकारियों की अंतिम वरिष्ठता सूची ब्यूरो के दिनांक 29.7.88 के सम-संख्यक पत्र के द्वारा सभी संबंधित अधिकारियों के मध्य परिचालित की गयी थी और उसके संबंध में दिनांक 16.8.88 तक प्रत्यावेदन मांगे गए थे। उसके उत्तर में जो प्रत्यावेदन प्राप्त हुए हैं उन पर विचार करने के बाद सभी आपत्तियों के उत्तर अलग-अलग दे दिए गए हैं। पूर्वोक्त तीनों सूचियां अब अंतिम है। सभी अधिकारियों की सूचना के लिए दिनांक 1.7.73, 1.7.85 तथा दिनांक 1.7.88 को केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो में कार्य कर रहे अनुवाद/प्रशिक्षण अधिकारियों की अंतिम वरिष्ठता सूची संलग्न है।

(विनोद कुमार बजाज)
निदेशक

सभी संबंधिथ अधिकारी

1) इसमें प्रयुक्त प्रशासनिक हिंदी के शब्द छाँटिए।

.....
.....
.....
.....
.....

2) इसकी वाक्य रचना की विशेषताएँ बताइए।

.....
.....
.....
.....
.....

7.5.2 वाणिज्य, व्यापार और बैंकिंग के क्षेत्र में हिन्दी

वाणिज्य और व्यापार का संबंध समाज के विभिन्न वर्गों से होता है जो लोग वाणिज्य व्यापार के कार्य में लगे होते हैं उनकी भाषा की विशिष्ट शब्दावली और मुहावरा होता है। वे लोग अपने कार्यकाल में तो इसका इस्तेमाल करते ही हैं आम आदमी का भी इस भाषा से कहीं न कहीं न वास्ता रहता है

क्योंकि वाणिज्य और व्यापार का क्षेत्र जीवन का बड़ा ही व्यापक और महत्वपूर्ण क्षेत्र होता है। आप कोई चीज खरीदेंगे तो "कैश मीमो" लेंगे, किसी चीज के लिए पैसे का "भुगतान" करेंगे तो उसकी "रसीद" लेंगे "पूंजी निवेश" करेंगे उसका "हिसाब-किताब" रखेंगे। इस प्रकार कहीं न कहीं इस भाषा से सभी का वास्ता पड़ता है। इसी तरह बैंक में खाता रखने की आवश्यकता सभी की होती है।

व्यापार और वाणिज्य का विस्तार किसी भाषा विशेष के क्षेत्र तक सीमित नहीं रहता बल्कि यह अंतर्राज्यीय अंतर्प्रांतीय और अंतर्राष्ट्रीय होता है। हिंदी भारतीय समाज में व्यापार वाणिज्य की भाषा बहुत समय से रही है। संपर्क भाषा के रूप में इसने देशव्यापी वाणिज्य और व्यापार को सुलभ बनाया है यही कारण है कि इस क्षेत्र में विकसित शब्दावली और मुहावरा हिंदी की बोलियों में खूब प्रचलित रहा है और आज भी यह काफी हद तक अपने परंपरागत रूप में उपलब्ध है। साथ ही साथ अंग्रेजी के प्रसार और अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्य और व्यापार की भाषा अंग्रेजी होने के कारण आज इस क्षेत्र में अंग्रेजी शब्दावली का भी भरपूर समावेश हुआ है। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िये :

कई लोग व्यावसायिक उद्यम के संबंध में जानकारी प्राप्त करने के इच्छुक होते हैं। ये लोग या पक्ष निम्नलिखित हैं : मालिक, प्रबंधक, ऋणदाता, लेनदार, संभावित निदेशकर्ता, कर प्राधिकारी, कर्मचारी आदि। इन लोगों को जो जानकारी उपलब्ध कराई जाती है, उसके आधार पर वे उद्यम के संबंध में निर्णय लेते हैं। यह सूचना उन्हें, साधारणतः वार्षिक रिपोर्ट के रूप में दी जाती है। इसे "वित्तीय रिपोर्ट" कहते हैं। वित्तीय रिपोर्ट में केवल वित्तीय विवरण (जैसे लाभ-हानि लेखा और तुलनपत्र) ही शामिल नहीं, बल्कि अन्य महत्वपूर्ण सूचनाएँ भी दी जाती हैं, जैसे कि व्यवसाय के संबंध में प्रबंधकों की भावी योजनाएँ तथा अपेक्षाएँ क्या हैं?

"व्यापार" शब्द का अर्थ है खरीदना और बेचना। इसलिए खरीदने और बेचने वाले व्यक्ति को व्यापारी कहा जाता है। व्यापारी उत्पादक और उपभोक्ता के बीच में बिचौलिए (middleman) का काम करता है।

व्यापार थोक भी हो सकता है और फुटकर भी। थोक व्यापारी उत्पादकों से बड़ी मात्रा में सामान खरीदता है और उसे फुटकर व्यापारियों को थोड़ी-थोड़ी मात्रा में बेचता है।

यहां "ऋणदाता", "लेनदार", "निवेशकर्ता", "लाभ-हानि लेखा", "तुलनपत्र", "बिचौलिए", "थोक", "फुटकर", "वित्तीय रिपोर्ट" आदि शब्दों पर ध्यान दीजिए। वाणिज्य और व्यापार के क्षेत्र में परंपरागत शब्दावली के लेनदार", "बिचौलिए", "थोक", "फुटकर"—के साथ ही "ऋणदाता", "निवेशकर्ता", "उपभोक्ता", "तुलनपत्र" जैसे शब्द हैं जो इस क्षेत्र के अंग्रेजी शब्दों के हिंदी पर्याय के रूप में निर्धारित गये हैं। इस क्षेत्र में अंग्रेजी की काफी शब्दावली भी ग्रहण की गई है जिसका आप समय-समय पर इस्तेमाल करते रहते हैं। "शेयर", "रिकार्ड", "डिबेंचर", "कैशमीमो" आदि ऐसे ही शब्द हैं। नीचे दिए गए कुछ उदाहरण देखिए :

उदाहरण 1

उद्योग-व्यापार

मसालों में तेजी का सप्ताह

हल्दी में तेजी, छुहारे लुढ़के

दिल्ली, 20 दिसम्बर (एन. एन. एस.)। अभी दक्षिण के पैदावारी क्षेत्रों से हल्दी, इलायची लालमिर्च आदि मसालों की आवकें सामान्य नहीं हुईं। इसके अलावा शहर में आटो वाहनों के आवागमन पर रोक के कारण ठेले वालों ने चौगुने भाड़े मांगने शुरू कर दिये। परिणामस्वरूप विगत सप्ताह छोटी इलायची, हल्दी, जीरा आदि मसालों में तेजी का रुख रहा। हल्दी 100/250 रुपए से उछल कर 2500/3500 रुपए हो गयी।

मेवों में हालांकि कारोबार कमजोर था क्योंकि दिसावरी मांग अभी बढ़नी शुरू नहीं हुई तथापि बादाम अफगानी तथा काजू में मजबूती रही। दिसावरी मांग के अभाव में छुहारे 400/500 रुपए लुढ़क कर 250/650 रुपए प्रति क्विंटल रह गये। गोला तेजी के बाद 4500/6000 रुपए क्विंटल बोला गया।

प्रस्तुत उदाहरण में प्रयुक्त शब्दावली पर ध्यान दीजिए "तेजी", "लुढ़के", "आवक", "दिसावरी" आदि शब्द व्यापार क्षेत्र की पारंपरिक शब्दावली से आए हैं।

उदाहरण-2

पूंजी बाजार : उतार-चढ़ाव का साप्ता. विश्लेषण

शेयरों में चौतरफा गिरावट

दिल्ली, 20 दिसम्बर (एन. एस. एस.)। विगत सप्ताह भाजपा द्वारा अविश्वास प्रस्ताव के बावजूद राव सरकार के गिरने के फिलहाल आसार न होने, वित्तीय संस्थाओं की लिवाली व बिकवालों की पटान से स्थानीय शेयर बाजार में हालांकि बाद में सुधार हुआ परन्तु देश में अयोध्या कांड से हुए भारी नुकसान के कारण शुरू में काफी गिरावट से पूर्व स्तर की तुलना में एसीसी 190 रुपए नीचा रह गया। जे. के. इंड, महावीर स्पिनिंग, मालवा कॉटन, रिलायंस, टेल्को और टिस्को 23 से 27.50 रुपए निकल गए। डी. सी. एम. व एस. के. बी. में काम ही नहीं हुआ। रोकड़ा वर्ग में आई. टी. सी. तथा ओसवाल फैट्स में 35/60 रुपए तथा अनुमति प्राप्त वर्ग में ए. डी. एफ. सी. व आई. सी. आई. सी. आई. 75/80 रुपए पीछे रह गए। गत 7 से 12 दिसम्बर तक स्थानीय शेयर बाजार कर्फ्यूग्रस्त रहा। इसलिए 4 दिसम्बर की तुलना में शेयर बाजार का सूचकांक 607.37 अंक से गिर कर गत सप्ताह 27 नवम्बर के 564.16 अंक को क्रास करते हुए 554.01 अंक

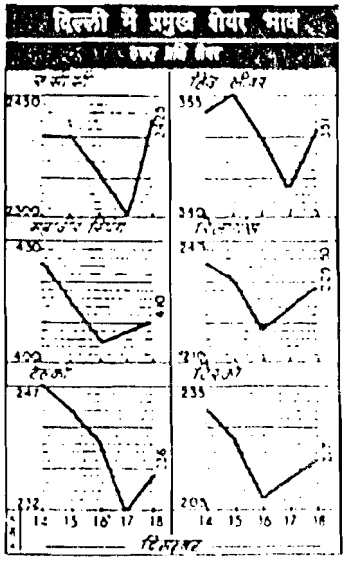

तक आने के पश्चात अंत में 566.71 अंक तक आ पाया था। बंबई में भी वह गत सप्ताह 2401 अंक का पिछला नीचा स्तर क्रास करके 2374.72 अंक होने के बाद अंत में 2476.89 अंक हो गया था। आंतरिक धारणा सुधार की बताई गई।

इस उदाहरण में "लिवाली", "बिकवालों", "पटान", "रोकड़ा" जैसी शब्दावली के साथ ही "शेयर", "क्रास" आदि प्रयोगों पर ध्यान दीजिए।

आधुनिक व्यापार और वाणिज्य में बैंकों की भूमिका बड़ी ही महत्वपूर्ण है क्योंकि अधिकांश लेन-देन बैंकों के माध्यम से ही होता है। आम आदमी के जीवन में भी बैंक एक अनिवार्य अंग है। अपना बचत खाता रखने के अलावा विभिन्न प्रकार की अदायगी रखने, कर्ज लेने आदि के लिए भी बैंक से संपर्क करना पड़ता है। इसीलिए बैंक के कामों में हिंदी का पर्याप्त प्रचलन है। उनके फार्म और अन्य कागजात अक्सर द्विभाषिक होते हैं। बचत खाता, जमापर्ची, आदेशपत्र, चैक, बैंक ड्राफ्ट आदि के फार्मों में हिंदी का प्रयोग होता है। इनकी फार्मों और प्रपत्रों की शब्दावली के साथ ही वाक्य रचना पर ध्यान देने पर आप इसके विशिष्ट मुहावरे से परिचित होंगे।

केवल 3000/- रुपये तक की रकम के लिये वैध/VALID ONLY IF DRAWN UPTO RS. 3000/-

पंजाब नैशनल बैंक
punjab national bank

यह आहरण - आदेश फार्म चैक नहीं है।
आहरण - आदेश फार्म के साथ पास - बुक देना आवश्यक है।
THIS WITHDRAWAL ORDER FORM IS NOT A CHEQUE. THE PASS BOOK SHOULD ACCOMPANY THE WITHDRAWAL ORDER FORM

_____ 19

स्वयं को अथवा धारक को रुपये _____
PAY SELF OR BEARER THE SUM OF RUPEES

_____ का भुगतान कर दें।

रु० Rs.

बचत निधि खाता सं० _____
SAVING FUND A/C No.

7.5.3 वैज्ञानिक और तकनीकी हिंदी

वैज्ञानिक और तकनीकी हिंदी का व्यवहार क्षेत्र शिक्षा तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी के प्रयोग अथवा कार्यान्वयन का क्षेत्र है। विज्ञान, उच्च शिक्षा और अनुसंधान में अंग्रेजी के व्यापक प्रयोग के बावजूद हिंदी माध्यम से पढ़ने वाले छात्रों की संख्या बहुत बड़ी है। इसके साथ ही प्रौद्योगिकी को व्यवहार में लाने वालों में बड़ी तादाद में वह वर्ग भी है जो हिंदी के माध्यम से ही संप्रेषण करता है। इन्हीं वर्गों की जरूरतों के लिए इस क्षेत्र में हिंदी का विकास हुआ है।

भारत में वैज्ञानिक अनुसंधान और चिंतन की परंपरा प्राचीन काल में तो काफी विकसित थी, किंतु मध्यकाल में इससे कोई नया विकास नहीं हुआ। फलतः संस्कृत भाषा में तो विज्ञान संबंधी लेखन हुआ था, किंतु हिंदी में इसकी वैसी परंपरागत नहीं रही। आधुनिक युग में आकर पश्चिम के विज्ञान और प्रौद्योगिकी से परिचय के बाद हिंदी में वैज्ञानिक लेखन शुरू हुआ। परिणामस्वरूप हिंदी में विज्ञान की शब्दावली में प्राचीन संस्कृत शब्दों के साथ ही अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक शब्दावली को ग्रहण किया गया है। हाइड्रोजन, नाइट्रोजन, कैलोरी आदि ऐसे ही शब्द हैं। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित वाक्यों को देखिए :

i) *रसायनशास्त्र का एक मूलभूत नियम कहता है किसी, 'रासायिक पदार्थ की, उसके शुद्ध रूप में रासायनिक संरचना सदैव एक ही रहती है।' उदाहरण के लिए, पानी सदैव हाइड्रोजन और ऑक्सीजन से बना होता है जो 1:8 के अनुपात में संयुक्त होते हैं। पानी का अणु बनाने के लिए भार के अनुसार एक भाग हाइड्रोजन और आठ भाग ऑक्सीजन संयुक्त होते हैं। यह 'स्थिर रासायनिक संरचना का नियम' कहलाता है।*

ii) *ऊष्मा अपने आप किसी ठंडे पदार्थ से गर्म पदार्थ की ओर नहीं बहती। यह ऊष्मा की गति का दूसरा नियम है।*

यहाँ आपने शब्दावली की इस विशेषता के अतिरिक्त एक और बात पर गौर किया होगा कि भाषा में अर्थ की एक खास तरह की सुनिश्चतता है जैसे "संयुक्त" शब्द यहाँ मिलने के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। विज्ञान में वह केवल इसी अर्थ में प्रयुक्त होगा। इससे भिन्न प्रयोग आप प्रशासनिक क्षेत्र में देखेंगे, जहाँ "संयुक्त निदेशक" या "संयुक्त सचिव" जैसे प्रयोग मिलेंगे। इसी तरह यहाँ ऊष्मा का बहना आम बोलचाल में जल के बहने या किसी अन्य तरल पदार्थ के बहने की तुलना में विशिष्ट और सुनिश्चित अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

7.5.4 विधि के क्षेत्र में हिंदी

यद्यपि ब्रिटिश शासन काल के दौरान पश्चिमोत्तर प्रदेश में अदालती कामकाज फारसी के स्थान पर हिंदी के प्रयोग के आदेश दिए गए थे, लेकिन व्यवहार रूप में कचहरियों की भाषा उर्दू ही रही थी। कालांतर में अंग्रेज़ी शिक्षा के प्रसार और उच्च शिक्षा की भाषा अंग्रेजी होने से हिंदी का महत्व केंद्रीय न रहकर हाशिए में पड़ता गया। आज़ादी के बाद जब हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया तो इसे विधि एवं न्याय व्यवस्था में भी अपनाने का प्रश्न उठा। इसके लिए विधि शब्दावली निर्धारित की

गई। विधिक भाषा की शब्दावली में अंग्रेज़ी के शब्दों के हिंदी पर्याय निर्धारित करते समय संस्कृत तथा अरबी-फ़ारसी शब्दों को आधार स्वरूप ग्रहण किया गया है।

विधि की भाषा बहुत ही सतर्क और सुनिश्चित भाषा होती है, क्योंकि उसमें जो कुछ कहा जा रहा है उसका सीधा और उतना ही अर्थ निकलना अपेक्षित है जितना कहने वाले या लिखने वाले का आशय है। इसलिए विधि के क्षेत्र में इस्तेमाल होने वाली हिंदी में स्पष्टता और एकार्थकता नितांत रूप से आवश्यक होती है। यही कारण है कि संदर्भ-विशेष के लिए निश्चित शब्द ही प्रयुक्त होता है, उसके लिए पर्याय रखने की छूट नहीं होती। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

> *(3) खण्ड (1) के उपखंड (ख) में किसी बात के होते हुए भी, जहाँ किसी राज्य के विधान मंडल ने, उस विधान मंडल में पुरःस्थापित विधेयकों या उसके द्वारा पारित अधिनियमों में अथवा उस राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित आध्यादेशों में अथवा उस उपखंड के पैरा (iii) में निर्दिष्ट किसी आदेश, नियम, विनियम या उपविधि में प्रयोग के लिए अंग्रेज़ी भाषा से भिन्न कोई भाषा विहित की है वहाँ उस राज्य के राजपत्र में उस राज्य के राज्यपाल के प्राधिकार से प्रकाशित अंग्रेज़ी भाषा में उसका अनुवाद इस अनुच्छेद के अधीन उसका अंग्रेज़ी भाषा में प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा।*

यहाँ "उपखंड", "पुरःस्थापित", "पारित", "प्रख्यापित", "उपविधि" आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है, जो विधि के क्षेत्र के अलावा अन्य किसी क्षेत्र में सामान्यतया प्रयुक्त नहीं होते। ये वस्तुतः विधि की तकनीकी शब्दावली है और यहाँ इन शब्दों के स्थान पर इनका कोई और पर्याय रखना उपयुक्त न होगा, क्योंकि जो बात कही जा रही है उसका निर्दिष्ट अर्थ के अतिरिक्त कोई भी और अन्य अर्थ निकलना अभीष्ट नहीं है।

शब्दावली के अतिरिक्त आपने वाक्य रचना पर भी गौर किया होगा। यहाँ भी कार्यालयी हिंदी की तरह कर्मवाच्य के प्रयोग की प्रवृत्ति दिखाई देती है। वाक्य भी सामान्य वाक्य प्रयोग की तुलना में काफी लंबा है। पूरा पैरा ही एक वाक्य है जिसमें कई खंडों और उपवाक्यों को शामिल किया गया है। ऐसी वाक्य रचना हिंदी की सामान्य प्रवृत्ति नहीं है। किन्तु हमारा विधिक लेखन अक्सर पहले अंग्रेज़ी में किया जाता है, फिर इसका हिंदी रूपांतरण होता है। अतः अंग्रेज़ी वाक्य निहितार्थ को पूर्णतया ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने के लिए ऐसी वाक्य रचना की ज़रूरत पड़ जाती है।

7.5.5 सामाजिक विज्ञानों के क्षेत्र में हिंदी

सामाजिक विज्ञानों की भाषा की विशेषता उस क्षेत्र की विशिष्ट शब्दावली होती है। इस क्षेत्र के अंतर्गत राजनीतिक विज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और इतिहास आदि विषय आते हैं। इनकी शब्दावली संकल्पनाओं और विचारधाराओं पर आधारित होती है और अपने भीतर विशिष्ट अर्थ समाहित किए होती है। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित पैराग्राफ़ को पढ़िए :

> *राष्ट्रवादी इतिहास लेखन ने स्वतंत्रता संघर्ष को वैचारिक आधार प्रदान करने और साम्राज्यवाद के आर्थिक नतीजों का विश्लेषण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। हालाँकि राष्ट्रवाद ने अपना ध्यान बाह्य पक्ष अर्थात् भारत के साम्राज्यवादी शोषण पर ही केंद्रित किया और आतंरिक पक्ष अर्थात् भारतीय समाज में विभिन्न वर्गों के पारस्परिक संघर्ष और वर्ग शोषण पर कम ध्यान दिया। इस दूसरे पक्ष पर अपनी दृष्टि को केंद्रित करने का कार्य मार्क्सवादी दृष्टि के प्रभाव के परिणामस्वरूप हुआ और यह 1940 के दशक के बाद लगातार बढ़ता गया। इस नयी दृष्टि ने ब्रिटिश शासन की आर्थिक राष्ट्रीय समीक्षा को ही शामिल नहीं किया बल्कि इस समीक्षा को भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद को विश्व पूँजीवाद व्यवस्था के ढाँचे विश्लेषण के अंतर्गत रखकर विकसित भी किया गया।*

यहाँ 'राष्ट्रवादी', 'राष्ट्रवाद', 'साम्राज्यवादी', 'पूँजीवाद', 'मार्क्सवाद', वर्ग शोषण आदि शब्दों पर गौर कीजिए। ये सभी पारिभाषिक शब्द हैं। इनका प्रयोग विशिष्ट अर्थों में होता है और जरूरी नहीं कि यह विशिष्ट अर्थ अपने मूल शब्द के अर्थ से सकारात्मक संगति ही रखे। राष्ट्र से बना राष्ट्रवाद शब्द और पूँजी से बना पूँजीवाद इस प्रकार के शब्द हैं। राष्ट्र से ही बना राष्ट्रीय शब्द अच्छे अर्थ में प्रयुक्त होता है। इसका तात्पर्य होता है देश-प्रेम, अपने राष्ट्र के प्रति निर्माणकारी, विकासपरक भूमिका अदा करने की इच्छा। लेकिन राष्ट्र से ही बने "राष्ट्रवाद" में यह पूरी तरह सकारात्मक दृष्टिकोण का अर्थ नहीं रहता। राष्ट्रवाद किन्हीं संदर्भों में अंधराष्ट्रभक्ति यानी अन्य राष्ट्रों को अपने राष्ट्र से नीचे मानने की प्रवृत्ति का भी सूचक होता है।

इस शब्दावलीगत वैशिष्ट्य के अतिरिक्त सामाजिक विज्ञानों की भाषा में वाक्य संरचनागत स्वरूप सामान्य भाषा का सा ही होता है। हाँ, अर्थशास्त्र में ज़रूर अपेक्षित संकेतों और प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है।

7.5.6 संचार माध्यमों में हिंदी

संचार माध्यमों के दो रूप हैं : (1) पत्र-पत्रिकाएँ (2) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया। पहले माध्यम के अंतर्गत समाचारपत्र—दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक—तथा विभिन्न प्रकार की पत्रिकाएँ आती हैं और दूसरे माध्यम के अंतर्गत रेडियो और टेलीविज़न। अतः भाषा की संचार माध्यमों संबंधी प्रयुक्ति में उसके मौखिक और लिखित, दोनों रूप शामिल होते हैं। ये दोनों रूप समान होते हुए भी एक-दूसरे के काफी भिन्न होते हैं। दोनों रूपों में अभीष्ट तो संप्रेषण ही होता है, किंतु संप्रेषण व्यापार की प्रक्रिया, दोनों में समान ढंग की नहीं होती है। मौखिक रूप से कही गई बात को यदि हम ज्यों की त्यों लिपिबद्ध कर दें, तो ज़रूरी नहीं कि वह उतनी ही संप्रेषणीय हो जितनी मौखिक रूप में थी। इसी प्रकार यह भी हो सकता है कि कोई कथन लिखित रूप में पढ़ने में जितना प्रभावपूर्ण लग रहा हो, उतना सुनने में न लगे। इसका एक आधार यह भी होता है कि लिखी हुई बात को हम एक से अधिक बार पढ़ सकते हैं यानी पहली बार में न समझ में आए तो दूसरी बार या तीसरी बार पढ़ सकते हैं। लेकिन उच्चारित शब्दों का तुरंत संप्रेषणीय होना अनिवार्य है अन्यथा वक्ता का उद्देश्य विफल हो जाएगा।

मुद्रित सामग्री के रूप में उपलब्ध समाचारपत्र, पत्रिकाएँ तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, दोनों का उद्देश्य समाज के सभी वर्गों के साथ संप्रेषण होता है। समाचार पढ़े जा रहे हैं या छापे जा रहे हैं तो वे वर्ग विशेष के लिए न होकर समाज के सभी वर्गों के लिए हैं यानी बुद्धिजीवियों, व्यवसायियों आदि से लेकर किसान और श्रमिक वर्ग तक के लिए हैं। ऐसी स्थिति में भाषा ऐसी होनी चाहिए जो सहज, सरल, स्पष्ट और बोधगम्य हो। लेकिन इसके साथ ही, संचार माध्यमों में विषयगत सीमा कोई नहीं होती। तकनीकी और विशिष्ट विषय या कला और साहित्य से लेकर खेल-कूद और बाज़ार भाव तक की सामग्री उनमें प्रस्तुत की जाती है। ऐसे में विभिन्न विषयों की अपेक्षित शब्दावली भी उनमें अवश्य ही समाविष्ट होती है और इस समावेश के बावजूद भाषा में बोलचाल की सरलता और लय बनाए रखनी पड़ती है।

इस तरह संचार माध्यमों में प्रयुक्त हिंदी जीवन के सभी क्षेत्रों से शब्दावली ग्रहण करते हुए उसे सामान्य बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त करने का प्रयास करती है। अंग्रेजी शब्दों के हिंदी पर्याय इस्तेमाल करने के साथ ही यह उनके अंग्रेज़ी रूप को भी ग्रहण करती है और लिप्यंतरण भी खूब अपनाती है। इसके साथ ही यह हिंदी की बोलियों से भी शब्द ग्रहण करती है जैसे "भितरघात करना", "पटकनी देना" आदि।

अखबारी भाषा में संक्षिप्तियाँ भी प्रयोग में लाई जाती हैं, जबकि हिंदी के अन्य प्रयोगों में संक्षिप्तियों का प्रचलन लगभग नहीं होता। "जद", "भाजपा", "बसपा" आदि का प्रयोग अखबार में खूब मिलता है। लेकिन आपने गौर किया होगा कि रेडियो और टेलीविज़न पर संक्षिप्तियों का प्रयोग इस ढंग से नहीं मिलता। क्या आप जानते हैं कि इस तरह का प्रयोग रेडियो और टेलीविज़न पर प्रसारित हिंदी में क्यों नहीं होता, जबकि अंग्रेजी में होता है। एक ही माध्यम द्वारा प्रसारित दो भाषाओं के प्रयोग में यह भेद क्यों है? यह भेद ही वस्तुतः एक ओर तो भाषा के मौखिक और लिखित रूप का अंतर प्रकट करता है दूसरी और हिंदी और अंग्रेजी के मुहावरे का अंतर बताता है। सामान्य रूप से संक्षिप्तियों के प्रयोग की प्रवृत्ति न होने के कारण हिंदी के श्रोता को उन्हें सुनते ही तुरंत समझने में कठिनाई हो सकती है, जबकि उनका लिखित रूप पढ़कर वह थोड़े से प्रयास से उन्हें समझ सकता है। अतः संप्रेषण में बाधा नहीं होती।

7.5.7 विज्ञापन के क्षेत्र में हिंदी

विज्ञापनों के क्षेत्र का संबंध काफी हद तक संचार माध्यमों से होता है। पत्र-पत्रिकाओं तथा रेडियो और टेलीविज़न पर विज्ञापन पढ़ना, सुनना और देखना हमारी इतनी आदत बन चुकी है कि यदि इनको बिल्कुल हटा दिया जाए तो हो सकता है कि थोड़े समय के लिए इनकी अनुपस्थिति हमें महसूस होती रहे। संचार माध्यमों के अलावा, विज्ञापन के अन्य माध्यम हैं—दीवारों, मार्गों, चौराहों आदि पर लगे बोर्ड और पोस्टर तथा सिनेमा का पर्दा। इस तरह, विज्ञान के तीन रूप हैं : (1) दृश्य (2) श्रव्य; (3) मुद्रित। टेलीविज़न और सिनेमा के पर्दे पर तीनों रूपों का इस्तेमाल होता है, समाचारपत्र, पत्रिकाओं, बोर्डों और पोस्टरों में पहले और तीसरे का तथा रेडियो पर दूसरे का। ये तीनों ही रूप एक-दूसरे के पूरक के रूप में काम करते हैं और भाषा अपनी गति और लय के साथ प्रस्तुत होती है, क्योंकि

विज्ञापन का उद्देश्य सूचना देने के साथ ही ध्यान आकृष्ट करना भी होता है। यदि वह व्यापारिक विज्ञापन है तो उसमें इतना आकर्षण होना चाहिए कि देखने-सुनने वाला वस्तु को खरीदने के लिए लालायित हो उठे। यदि वह प्रचारपरक विज्ञापन है तो देखने-सुनने वाले के मन-मस्तिष्क पर उसका इतना गहरा असर होना चाहिए कि प्रचार करने वाले की बात पर गौर करने या उसे मानने के बारे में विचार अवश्य करे। यदि विज्ञापन रोज़गार आदि से संबंधित है तो उसमें सूचना की स्पष्टता, पूर्णता आदि अपेक्षित होती है। जब हम विज्ञापनों के क्षेत्र में प्रयुक्त हिंदी भाषा पर गौर करते हैं तो हम उसमें कई तरह की विशेषताएँ पाते हैं। नीचे दी गई पंक्तियाँ पढ़िए :

हॉकिन्स लाइए.

40% ईंधन खर्च बचाइए.

उत्तमता ऐसी कि भारतभर को है भरोसा

हॉकिन्स®

1 करोड़ से ज्यादा प्रेशर कुकर बिके हैं

उपर्युक्त उदाहरण में आप गौर करेंगे कि मुद्रित सामग्री पाठ्य और दृश्य, दोनों रूपों में ध्यान आकृष्ट करने के उद्देश्य से छापी गई है। छोटे-बड़े टाइप का प्रयोग इसी उद्देश्य से किया गया है। इसके अलावा, चित्र की सहायता भी ली गई है।

इन दृश्य विशिष्टताओं के अलावा, अब भाषागत विशिष्टताओं पर गौर कीजिए। "लाइए", "बचाइए", द्वारा तुकांत पंक्तियाँ लिखने का प्रयास है। साथ ही वाक्य में शब्दों का क्रम सामान्य से भिन्न है "उत्तमता ऐसी कि भारत-भर को है भरोसा" सामान्य ढंग से हम लिखते तो कहते "भरोसा है"। यहाँ यह क्रम भी ध्यानाकृष्ट करने के उद्देश्य से रखा गया है।

इसके अलावा आपने यहाँ सुझावपरक वाक्य प्रयोग पर भी गौर किया होगा—हॉकिन्स लाकर ईंधन बचाने का सुझाव है। निम्नलिखित उदाहरण में भी इसी तरह की विशेषताएँ मिलेंगी :

"आयोडेक्स मलिए
काम पर चलिए"

अब अगला उदाहरण देखिए, जिसमें शब्दों के साथ चित्र भी बोल रहा है :

आखिर क्यों लाखों लोगों को विश्वास है बजाज स्टोरेज वॉटर हीटर पर?

क्योंकि

- बजाज स्टोरेज़ वॉटर हीटर से मिनटों में गरमागरम पानी मिलता है.
- इसमें असरदार थर्मोस्टैटिक नियंत्रण लगा है.
- अचूक सुरक्षा के लिए इसमें लगा है प्रेशर रिलीज़ वॉल्व और फ्यूज़ेबल प्लग तथा
- इसके साथ जुड़ा है भरोसेमंद बजाज का नाम भारत में हमारे पास उपकरणों की सबसे विस्तत श्रेणी है देशभर में कहीं

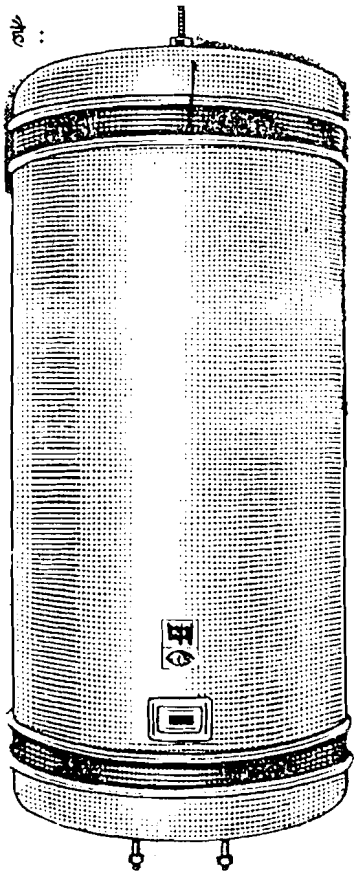

भी बिक्री के बाद की तुरंत सेवा के लिए 1000 से भी अधिक विक्रेता फैले हैं.

तभी तो बजाज स्टोरेज वॉटर हीटर पर हैं सबकी नज़रें!

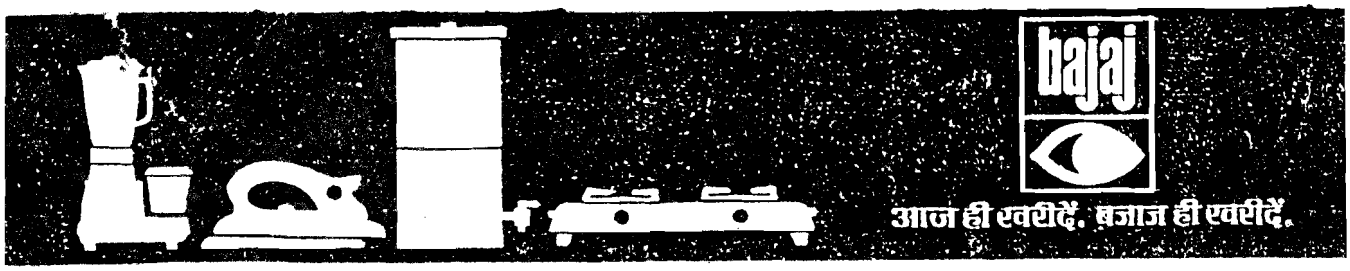

वाणिज्यिक विज्ञापनों के अलावा और भी कई तरह के विज्ञापन होते हैं जैसे रोजगार संबंधी विज्ञापन, निविदा, सूचनाएँ, वर्गीकृत विज्ञापन आदि। और तो और वैवाहिक विज्ञापन भी होते हैं। विषय और आवश्यकता के अनुसार इन विज्ञापनों की भाषा में भी फर्क होता है। नीचे हम कुछ विज्ञापनों के उदाहरण दे रहे हैं उनकी भाषिक विशेषताओं पर ध्यान दीजिए :

उदाहरण (क)

हिन्दुस्तान, नई दिल्ली, सोमवार, 21 दिसम्बर, 1992

वर्गीकृत विज्ञापन

रिक्त स्थान

आवश्यकता है अनुभवी चौकीदार, मसालची वेटर व सफाई कर्मचारी की। होटल तृप्ति, 10174, गुरुद्वारा रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-110005

(129062)

ओ.एस.एस. (रजि.) कम्पनी को शीघ्र चाहिए; 10 फील्ड आफीसर, 10 अनट्रेंड सुपरवाईजर, हैल्पर, 25 गार्ड्स, 2 लेडीज क्लर्क, योग्यता : अनपढ़/ग्रेजुएट, सभी सरकारी सुविधाएं. वेतनमान : 1533/4700, फार्म फीस सहित मिलें : ई-196, सेक्टर-16, नोएडा (अल्का सिनेमा के पीछे)। (6943)

तुरंत चाहिये : दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद, फरीदाबाद की लिमिटेड कम्पनियों हेतु 25 गार्ड्स, 35 अनट्रेंड सुपरवाईजर, 10 फील्ड आफीसर, 42 हैल्पर, 5 क्लर्क, चपरासी, वेतन : 1490/1850/2200/4000। योग्यता : अनपढ़/ग्रेजुएट, फंड, बोनस, वर्दी, आवास मुफ्त, स्थाई ड्यूटी। फार्म फीस भर कर तुरंत ड्यूटी करें। मिलें : कार्यालय, अमर प्लेसमेंट ब्यूरो (रजि.), संजय मार्केट, शिपरा होटल के सामने, दादरी रोड, अट्टा, सेक्टर-27, नोएडा।

(6944)

उदाहरण (ख)

निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से कार्यपालक इंजीनियर लो.नि.वि. मंडल 26 (दि.प्र.) केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के अनुमोदित और पात्र ठेकेदारों तथा अन्य इंजीनियरी सेवा/एम.ई.एस. व पी. एंड टी. तथा लोक निर्माण विभाग की उपर्युक्त सूची के ठेकेदारों से दिनांक 14-1-93 के 3-00 बजे तक नीचे लिखे कार्य के लिए मद दर मुहरबंद निविदाएं आमंत्रित करते हैं।

कार्य का नाम : संजय गांधी स्मारक अस्पताल की असाधारण मरम्मत (उपशीर्ष : ऑपरेशन थैटर के पास अल्यूमीनियम दरवाजे का लगाना)।

अनुमानित लागत : रु. 187723-00

अग्रिम धन : रु. 4693-00

निविदाएं उसी दिन 3-30 बजे अपराह्न खोली जाएंगी। अग्रिम धन भारतीय स्टेट बैंक में जमा करें और रसीदी चालान या भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा गारंटी किए हुए किसी भी अनुसूचित बैंक की मांग-पत्र जमा रसीदी निविदा के साथ भेजें। शर्तें और निविदा प्रपत्र रु. 100/- (एक सौ रुपये) (वापस नहीं होंगे) भुगतान करने पर इस कार्यालय से दिनांक 12-1-93 तक कार्यदिवसों में लिए जा सकते हैं।

उन ठेकेदारों की निविदाएं अस्वीकार कर दी जाएंगी जो निर्धारित तरीके से अग्रिम राशि जमा नहीं करेंगे।

ह./- कार्यपालक इंजीनियर

सूप्रनि-1995/92 2637

आपने गौर किया होगा कि इन विज्ञापनों की भाषा व्यापारिक विज्ञापनों से फर्क है। इसमें कार्यालय भाषा की औपचारिकता है साथ ही प्रशासनिक क्षेत्र की पारिभाषिक शब्दावली का निर्वाह है। वास्तव में अपने पूरे स्वरूप में यह कार्यालय हिंदी ही है। इन विज्ञापनों का उद्देश्य वास्तव में सूचना देना और उसके माध्यम से उपयुक्त कर्मचारी अथवा ठेकेदारों की सेवाएं प्राप्त करना है जबकि व्यापारिक विज्ञापनों का उद्देश्य लोगों को किसी वस्तु की खरीद के लिए आकृष्ट करना होता है। इस अंतर के अनुरूप ही इन दोनों की भाषा में अंतर आ जाता है।

निम्नलिखित उद्धरणों को पढ़ें और बताएँ कि वे हिंदी की किस-किस प्रयुक्ति से संबंधित हैं और क्यों?

क) अहमदाबाद, 20 दिसम्बर (वार्ता) । केन्द्रीय कृषि मंत्री बलराम जाखड़ ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की मान्यता रद्द करने के संदर्भ में कोई भी निर्णय पर्याप्त विचार-विमर्श के बाद ही किया जाएगा।

श्री जाखड़ के नेतृत्व में कांग्रेस (इ) का एक दल गुजरात में दंगा प्रभावित इलाकों का दौरा करने के बाद कल रात यहां पहुंचा। श्री जाखड़ ने यहां पत्रकारों को बताया कि केन्द्र अयोध्या में बाबरी मस्जिद को गिराने के लिए जिम्मेदार सभी लोगों भले ही वे कितने भी बड़े क्यों न हों के विरुद्ध कार्रवाई करने के लिए कृतसंकल्प है।

यह पूछे जाने पर कि क्या अयोध्या की घटनाओं के बाद देश में हुई हिंसा की जांच के लिए राष्ट्रीय स्तर पर आयोग गठित करने का सुझाव है कृषि मंत्री ने कहा कि इसका निर्णय मंत्रिमंडल करेगा।

श्री जाखड़ प्रतिभूति घोटाले की जांच कर रही संयुक्त संसदीय समिति के अध्यक्ष रामनिवास मिर्धा, कपड़ा राज्य मंत्री अशोक गहलोत, अखिल भारतीय कांग्रेस (इ) समिति की महासचिव कुमुदबेन जोशी, अहमद पटेल और तारिक अनवर ने दंगा प्रभावित इलाकों का दौरा किया।

.....

.....

सिविल कंसट्रक्शन विंग :
आकाशवाणी

ख) अधिशासी अभियंता (वि), प्रभाग सं. 2 सिविल कंसट्रक्शन विंग, आकाशवाणी, 11वां तल, सूचना भवन, लोधी रोड, नई दिल्ली केलोनिवि, सै.अभि.से., रेलवे, डाक व तार के स्वीकृत एवं ग्राह्य ठेकेदार तथा क्षेत्र में विशेषज्ञ एजेंसियों से दिनांक 6-1-1993 को अप. 3 बजे तक मुहरबंद लिफाफे में मद दर निविदाएं आमंत्रित करते हैं।

एजेंसी, जो कार्य हेतु निविदा देने की इच्छुक हैं, को निविदा के निर्गमन हेतु आवेदन के साथ मैकेनिकल वेंटीलेशन सिस्टम हेतु विशेषतः इस्तेमालकर्ताओं से समान कार्य के समापन के संतोषजनक कार्य हेतु समर्थक आलेख्य तथा तत्पश्चात् परफोरमेंस के प्रमाणपत्र प्रस्तुत करने होंगे अन्यथा निर्विदा पर विचार नहीं किया जाएगा।

.....

.....

.....

ग) **मिल्क पाउडर** : ट्रांसपोर्ट की दिक्कत के कारण बाहर माल लोड न होने से मिल्क पाउडर नोवा, शक्ति मधु और मिल्कफूड के भाव एक रुपया मुलायम होकर क्रमशः 37 रुपए, 38 रुपए, 40 रुपए और 45 रुपए प्रति किलो बोले गये। दोआबा, ममता, अंकुर और मालवा मिल्क पाउडर के भाव भी एक रुपया घटकर सभी 37 से 38 रुपए प्रतिकिलो बोले गये।

सिफती मिल्क पाउडर 40 की बजाए 39 रुपए बिकते सुना गया। जबकि माल कम आने से मिल्कलैंड व इंडाना मिल्क पाउडर के भाव एक रुपया बढ़कर 42 और 43 रुपए प्रति किलो हो गये।

.....

.....

.....

घ) "लेखाकरण प्रणाली द्वारा समस्त वित्तीय कार्य व्यापारों को लेखा बहियों में रिकार्ड कर लिया जाता है। लेखाकरण दर्ज सारे लेन-देन के बिल बीजक, रसीद, कैश मैमो आदि के रूप में लिखित प्रमाण उपलब्ध होने चाहिए।"

.....

.....

.....

ङ) अंग्रेजों की कृषि नीति मुख्यतः अधिकतम भू-राजस्व एकत्रित करने के उद्देश्य से प्रेरित थी। स्थायी बंदोबस्त के इलाकों में जमींदारों को एक निश्चित धनराशि भू-राजस्व के रूप में सरकार को देनी होती थी। जमींदार किसानों से उससे कहीं अधिक लगान एकत्र करते थे जितना कि उन्हें सरकार को देना होता था। उनकी इस माँग को पूर्ण करने के लिए किसानों को स्वतः ही महाजनों से धन उधार लेना पड़ता था और महाजन किसानों से अत्यधिक ब्याज वसूल करते थे, जब भी किसान जमींदार या महाजनों द्वारा शोषण के विरुद्ध आवाज उठाते थे तो सरकार शोषकों का ही साथ देती थी।

.....

.....

.....

च) जब सेल की दोनों प्लेटों को एक चालक तार द्वारा जोड़ देते हैं, तो तांबे की प्लेट का जस्ते की प्लेट की अपेक्षा अधिक विभव होने के कारण जस्ते की प्लेट से इलेक्ट्रॉन तांबे की प्लेट की ओर जाने लगते हैं यानी विद्युत-धारा तांबे की प्लेट से जस्ते की ओर प्रवाहित होने लगती है। आयनिक सिद्धांत के अनुसार गंधक का अम्ल अपने आयनों, हाइड्रोजन (धनावेश) तथा सल्फेट (ऋणावेश) में विभक्त हो जाता है। प्लेटों के बीच का विभवान्तर वि॰ वा॰ बल के बराबर बनाए रखने के लिए $(SO_4)^-$ आयन जस्ते की प्लेट की ओर तथा H^+ आयन तांबे की प्लेट से जस्ते की प्लेट की ओर तथा सेल के अन्दर जस्ते की प्लेट से तांबे की प्लेट की ओर बहती रहती है। $(SO_4)^-$ आयन जस्ते की प्लेट को अपना आवेश देकर जस्ते से क्रिया करते हैं और जिंक सल्फेट $(ZNSO_4)$ बनाते हैं। तथा (H^+) आयन अपना आवेश तांबे की प्लेट को देकर बुलबुलों के रूप में बाहर निकल जाते हैं। वैद्युत धारा सेल से बाहर तांबे से जस्ते की ओर तथा सेल के भीतर जस्ते से तांबे की ओर चलती है।

.....

.....

.....

छ) विषय : लीव सैलरी/पेंशन कंट्रीब्यूशन का भुगतान

महोदय,

उपर्युक्त विषय पर कृपया इस ब्यूरो का तारीख 14.6.88 (प्रतिलिपि संलग्न) का समसंख्यक पत्र देखें। आपने अभी तक वेतन तथा लेखा अधिकारी कार्यालय द्वारा मांगी गई सूचना इस ब्यूरो में नहीं भेजी है। कृपया सूचना शीघ्र उपलब्ध कराने की व्यवस्था करें ताकि आगे की कार्रवाई की जा सके।

.....

.....

.....

7.6 सारांश

इस इकाई में आपने प्रयोजनमूलक भाषा और प्रयुक्ति की संकल्पना के विषय में पढ़ा है। अब आप जान गए हैं कि प्रयुक्ति क्या है, यह किन आधारों पर निर्मित होती है, वे आधार किस प्रकार बनते हैं। अब आप यह भी जान गए हैं कि हिंदी की वर्तमान प्रयुक्तियाँ कौन-कौन सी हैं तथा उनके व्यवहार क्षेत्र का विस्तार कहाँ-कहाँ है।

आपने यह भी पढ़ा है कि परस्पर भिन्न होने के बावजूद भी एक प्रयुक्ति का दूसरे में समावेश होता रहता है क्योंकि वास्तव में प्रयुक्तियों के बीच आपस में कोई सीमा रेखा नहीं खींची जाती। वे आवश्यकतानुसार निर्मित होती हैं। उनका अर्थबोध तथा अभिव्यक्ति शैली किसी क्षेत्र विशेष की जरूरतों की देन होता है और उस क्षेत्र विशेष में वह शब्दावली अर्थबोध, और अभिव्यक्ति शैली कमोबेश रूढ़ हो जाती है। लेकिन इसका मायने यह नहीं होता कि उसमें परिवर्तन की कोई संभावना नहीं होती। संभावना अवश्य होती है लेकिन यह परिवर्तन किसी व्यक्ति विशेष या वर्ग विशेष की इच्छा का परिणाम न होकर प्रयुक्ति क्षेत्र की जरूरतों का परिणाम होता है। व्यापार-वाणिज्य के क्षेत्र में बड़ी तादाद

में आई अंग्रेज़ी शब्दावली ऐसी ही जरूरत का उदाहरण है। विभिन्न प्रयुक्तियों और उनके व्यवहार क्षेत्र के पढ़ने के बाद आप इन क्षेत्रों में हिंदी भाषा का सही व्यवहार कर सकते हैं।

7.7 शब्दावली

संप्रेषण — अपनी बात को दूसरे तक पहुँचाना
अंतर्देशीय — देश के भीतर
अर्थच्छबियाँ — अर्थ के अनेक स्तर
कार्यान्वयन — प्रयोग अथवा व्यवहार में लाना

7.8 उपयोगी पुस्तकें

डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव सं., *"प्रयोजनमूलक हिंदी"*, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

डॉ. विनोद गोदरे, *"प्रयोजनमूलक हिंदी"*, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

डॉ. रीतारानी पालीवाल, *"प्रयोजनमूलक हिंदी : अर्थ, क्षेत्र और विस्तार"* लेख (अनुवाद की सामाजिक भूमिका पुस्तक में संकलित) प्रकाशक-सचिन प्रकाशन, दिल्ली

7.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

क) देखें, भाग 7.2

ख) देखें, भाग 7.3

ग) देखें, भाग 7.4

घ) देखें, भाग 7.5